रासलीला

प्रेम का मण्डल

‘भागवतपुराण’ की एक कथा पर आधारित

भाग पाँच :
गोपियाँ वन में ढूँढ़ती हैं

“कृष्ण कहाँ हैं? क्या तुमने कृष्ण को देखा है?” वन में सब ओर भटकती हुई गोपियाँ पुकारने लगीं—“कृष्ण! कृष्ण!” और सबसे पूछने लगीं, “क्या तुमने कृष्ण को देखा है?” वे वृक्षों से पूछने लगीं, पक्षियों से पूछने लगीं, फूलों से पूछतीं, नदियों से, धरती से और आकाश से पूछती गईं, चाँद और तारों से पूछने लगीं। और वृक्षों ने, पक्षियों ने, पशुओं ने, फूलों ने, नदियों, धरती और आकाश ने, चाँद और तारों ने मन्दस्वर में उत्तर दिया,

“हम सभी भगवान का ही रूप हैं। हमसे प्रेम करो और तुम्हें वे मिल जाएँगे।”

पहले तो गोपियों ने उन्हें सुना ही नहीं और अगर सुना भी, तो उसे अनसुना कर दिया। उन्हें अब भी यही विश्वास था कि केवल कृष्ण, उनका मनोहर ग्वाला ही उन्हें वह दे सकता है जिसके लिए वे तड़प रही हैं। और सुन्दर ग्वाले के रूप में कृष्ण कहीं भी नहीं मिल रहे थे। कई घण्टे बीत गए, गोपियाँ और भी थक गईं, उनके हृदय की पीड़ा और भी असहनीय होती गई।

और उधर, राधा तट के किनारे, उस ख़ाली मैदान तक पहुँच गईं। वे चुपचाप बैठ गईं और जो कुछ हुआ था उस पर विचार करने लगीं। कुछ देर पहले वे कृष्णप्रेम में डूबी हुई थीं और वह प्रेम व्यापक, सर्वसामर्थ्यशाली महसूस हुआ था मानो उस प्रेम में यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड और उससे भी परे सब कुछ समाया हो। कैसा पूर्ण आह्लाद, कैसा परमानन्दमय था वह! वे उसे खो बैठी थीं, क्यों और कैसे?

जैसे ही उन्होंने अपने आप से यह प्रश्न पूछा, उत्तर उनके सामने ही था। वह प्रेम ठीक उसी क्षण विलुप्त हो गया था जब उन्होंने यह सोचा कि अकेली वे ही हैं जो श्रीकृष्ण के सच्चे स्वरूप को देख पाई हैं, पहचान पाई हैं। उस अधिकार भरे, अहंकार भरे विचार से, उन्होंने भगवान के प्रेम के अनुभव से स्वयं को अलग कर लिया था।

“फिर कभी नहीं,” उन्होंने कहा। “यदि कभी उस अनुभव को पाने की मुझ पर दोबारा कृपा हुई, तो मैं कभी भी ऐसा नहीं सोचूँगी कि वह अनुभव मुझ अकेली का ही है। क्योंकि आप सभी के भगवान हैं। कोई अकेला ही आप पर अपना अधिकार नहीं जता सकता। कोई यह नहीं कह सकता कि आप बस उसी के हैं।”

एक बार फिर उन्हें भगवान श्रीकृष्ण की आवाज़ सुनाई दी।

“अन्तर में देखो। मैं तुम्हारे अन्तर में हूँ और सर्वत्र हूँ।”

पहले तो उन्हें ये शब्द समझ में नहीं आए, इसलिए वे उन शब्दों को अपने अन्तर में बार-बार दोहराती रहीं, और वे शब्द उनके रोम-रोम में गूँजने लगे।

ऐसा करते ही भगवान कृष्ण उनकी मन की आँखों के सामने प्रकट हुए : उनका वह रेशमी पीताम्बर, तेजस्वी श्यामवर्ण और केशों में मोरपंख सजा हुआ। उनका वह अति मनमोहक रूप राधा के मन में पुनः उभरा। राधा के भीतर असीम कृतज्ञता उमड़ने लगी। मन ही मन उन्होंने कृष्ण को तुलसी और चमेली का हार चढ़ाया, उन्हें प्रणाम किया। उनकी अर्चना करते हुए वे प्रार्थना करने लगीं कि वे अपना सारा जीवन कृष्ण की सेवा में बिता सकें। जब वे ऐसा कर रही थीं, तब कृष्ण उनकी ओर देखकर मुस्कराए और एक बार फिर राधा की पूरी सत्ता प्रेम से सिक्त हो गई। राधा को महसूस हुआ कि वह परिपूर्ण है, सम्पूर्ण है व पूरी तरह तृप्त है, उसी तरह जैसे उन्हें उस समय महसूस हुआ था जब वे श्रीकृष्ण के साथ नृत्य कर रही थीं।

और अब वे समझ गईं। प्रेम, आनन्द और पूर्णता का अनुभव उनके अपने अन्तर में विद्यमान था। वह अनुभव ही कृष्ण थे। अब उन्होंने जान लिया था कि भगवान उनके अन्दर, और उनके चारों ओर प्रत्यक्ष रूप में चैतन्य हैं।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।